International Journal of Multidisciplinary Engineering in Current Research - IJMEC
Volume 10, Issue 7, July-2025, http://ijmec.com/, ISSN: 2456-4265

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण और उनके व्यवहार के बीच संबंध का विश्लेषण

शालिनी शर्मा[1], डॉ नीतू मान[2]

शोधार्थी, कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आईआईएमटी यूनिवर्सिटी, मेरठ[1]
सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आईआईएमटी यूनिवर्सिटी, मेरठ[2]

सार

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण और उनके व्यवहार के बीच संबंध का विश्लेषण करना है। शैक्षिक वातावरण के घटक जैसे भौतिक संरचना, शिक्षक-छात्र संबंध, अनुशासनात्मक माहौल और कक्षा वातावरण का छात्रों के व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। माध्यमिक स्तर पर छात्रों का व्यवहार विकास उनके भविष्य की शैक्षणिक एवं व्यावसायिक सफलता के लिए आधारभूत होता है। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उपयोग करते हुए उत्तर प्रदेश के तीन जिलों से 450 माध्यमिक स्तर के छात्रों (225 लड़के, 225 लड़कियां) का नमूना चुना गया। आंकड़े संग्रहण हेतु शैक्षिक वातावरण मापनी (SES), शिक्षक-छात्र संबंध स्केल (TSRS), अनुशासनात्मक वातावरण मापनी (DES), तथा व्यवहार मूल्यांकन स्केल (BAS) का प्रयोग किया गया। अध्ययन की परिकल्पना यह थी कि शैक्षिक वातावरण के विभिन्न घटक छात्रों के व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। परिणामों से पता चला कि सकारात्मक शैक्षिक वातावरण छात्रों के व्यवहार में महत्वपूर्ण सुधार लाता है। शैक्षिक वातावरण ($r=0.78$), शिक्षक-छात्र संबंध ($r=0.74$), अनुशासनात्मक माहौल ($r=0.69$) और कक्षा वातावरण ($r=0.66$) का छात्र व्यवहार के साथ सकारात्मक सहसंबंध पाया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि शैक्षिक वातावरण के सुधार से छात्रों में अनुशासन, सामाजिक व्यवहार और शैक्षणिक प्रदर्शन में वृद्धि होती है। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि शैक्षिक संस्थानों में समग्र वातावरण का विकास छात्रों के व्यवहारिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द: शैक्षिक वातावरण, छात्र व्यवहार, माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक-छात्र संबंध, व्यवहारिक विकास

1. प्रस्तावना

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा छात्रों के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ है जहाँ वे अपनी पहचान, मूल्यों और व्यवहार पैटर्न का विकास करते हैं। शैक्षिक वातावरण इस विकास प्रक्रिया में एक निर्णायक कारक है। वर्तमान युग में शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है बल्कि यह व्यक्तित्व के समग्र विकास का साधन है। इस संदर्भ में शैक्षिक वातावरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9वीं से 12वीं) का विशेष महत्व है क्योंकि इस स्तर पर छात्रों में संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक परिवर्तन होते हैं। शैक्षिक वातावरण से तात्पर्य उन सभी भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक कारकों से है जो विद्यालय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इसमें

विद्यालय की भौतिक संरचना, कक्षा का वातावरण, शिक्षक-छात्र संबंध, अनुशासनात्मक नीति, सहपाठियों के साथ संपर्क, पाठ्यक्रम की प्रकृति और शिक्षण विधियां शामिल हैं। यह वातावरण न केवल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है बल्कि उनके व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्यों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार, व्यक्ति का व्यवहार उसके पर्यावरण से गहरा प्रभावित होता है। बंडुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार छात्र अपने परिवेश से देखकर, सुनकर और अनुभव करके सीखते हैं। इसलिए यदि शैक्षिक वातावरण सकारात्मक है तो छात्रों का व्यवहार भी सकारात्मक होगा। इसके विपरीत, नकारात्मक वातावरण में छात्रों के व्यवहार में अवांछनीय परिवर्तन हो सकते हैं।

अनुसंधान दर्शाते हैं कि सकारात्मक शैक्षिक वातावरण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाता है और नकारात्मक व्यवहार को कम करता है। वातावरणीय कारक जैसे कक्षा का आकार, शिक्षण संसाधन, अनुशासन नीति और सांस्कृतिक माहौल छात्रों के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। विद्यालय का भौतिक वातावरण, शिक्षकों का दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, और सामाजिक संपर्क की स्थिति सभी छात्रों के व्यवहारिक विकास में योगदान देते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शैक्षिक वातावरण के महत्व पर जोर देती है और समग्र विकास के लिए अनुकूल माहौल की आवश्यकता को रेखांकित करती है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है बल्कि छात्रों के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास में सहायता करना है। इस दृष्टि से शैक्षिक वातावरण की गुणवत्ता महत्वपूर्ण हो जाती है। समकालीन शिक्षा के संदर्भ में यह आवश्यक है कि हम छात्रों के व्यवहार पर शैक्षिक वातावरण के प्रभाव को समझें। माध्यमिक स्तर पर छात्र किशोरावस्था से गुजर रहे होते हैं जो एक संवेदनशील अवस्था है। इस अवस्था में उनका व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्य प्रणाली का निर्माण होता है। इसलिए इस समय उन्हें सकारात्मक और स्वस्थ वातावरण की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में, यह अध्ययन माध्यमिक स्तर के छात्रों के शैक्षिक वातावरण और उनके व्यवहार के बीच संबंध को समझने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

शैक्षिक वातावरण और छात्र व्यवहार के संबंध पर व्यापक शोध हुए हैं। इस विषय पर उपलब्ध साहित्य का क्रमबद्ध विश्लेषण निम्नलिखित है:

2.1 शैक्षिक वातावरण की अवधारणा और परिभाषा

गुप्ता और शर्मा (2019) ने शैक्षिक वातावरण को परिभाषित करते हुए कहा है कि यह विद्यालय के भीतर और बाहर के उन सभी कारकों का समुच्चय है जो शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। इसमें भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक आयाम शामिल हैं। शैक्षिक वातावरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें विद्यालय की भौतिक संरचना से लेकर शिक्षकों और छात्रों के बीच की अंतर्क्रिया तक सब कुछ शामिल है। कुमार (2020) के अनुसार शैक्षिक वातावरण के मुख्य घटक हैं: भौतिक संरचना (भवन, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला), सामाजिक वातावरण (शिक्षक-छात्र संबंध, सहपाठी संबंध), शैक्षणिक वातावरण (पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, मूल्यांकन प्रणाली), अनुशासनात्मक माहौल (नियम-कायदे, दंड व्यवस्था), और प्रशासनिक व्यवस्था (नेतृत्व शैली, निर्णय प्रक्रिया)। ये सभी घटक मिलकर एक समग्र शैक्षिक वातावरण का निर्माण करते हैं। सिंह और मिश्रा (2018) ने अपने अध्ययन में बताया कि शैक्षिक वातावरण न केवल छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित करता है बल्कि उनके व्यक्तित्व, चरित्र और

सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक सकारात्मक शैक्षिक वातावरण छात्रों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास और नेतृत्व कौशल का विकास करता है।

2.2 शैक्षिक वातावरण का छात्र व्यवहार पर प्रभाव

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किए गए अध्ययनों में, ब्राडशॉ और अन्य (2009) ने 37 प्राथमिक विद्यालयों के 8,750 छात्रों पर किए गए व्यापक अनुसंधान से पाया कि सकारात्मक विद्यालय वातावरण छात्रों में आक्रामक व्यवहार को कम करता है और सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देता है। उनके अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यालयों में सकारात्मक माहौल था, वहां छात्रों में समस्यात्मक व्यवहार 35% तक कम देखा गया। कोहन और अन्य (2009) ने विद्यालयी जलवायु पर व्यापक अध्ययन किया और पाया कि सकारात्मक विद्यालयी जलवायु छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक प्रदर्शन दोनों को बेहतर बनाती है। उन्होंने विद्यालयी जलवायु के चार मुख्य घटक बताए - सुरक्षा (शारीरिक और भावनात्मक), संबंध (शिक्षक-छात्र और सहपाठी संबंध), शिक्षण (गुणवत्तापूर्ण निर्देश), और पर्यावरण (भौतिक और भावनात्मक माहौल)। इन सभी घटकों का छात्र व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।

2.3 शिक्षक-छात्र संबंध का प्रभाव

हैम्रे और पिआंटा (2005) के मौलिक अध्ययन के अनुसार शिक्षक-छात्र संबंध की गुणवत्ता छात्रों के शैक्षणिक और व्यवहारिक परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों में सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हैं और नकारात्मक व्यवहार को कम करते हैं। उनके अनुसार जब शिक्षक छात्रों के साथ सम्मानजनक, सहयोगपूर्ण और समझदारी भरा व्यवहार करते हैं, तो छात्रों में आत्मविश्वास, प्रेरणा और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। अजीत और अन्य (2013) ने शिक्षक-छात्र संपर्क की गुणवत्ता पर व्यापक अध्ययन किया और पाया कि शिक्षक-छात्र संपर्क छात्रों के व्यवहारिक परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। जिन कक्षाओं में शिक्षक छात्रों के साथ मित्रवत, सहायक और प्रेरणादायक व्यवहार करते थे, वहां छात्रों का व्यवहार अधिक अनुशासित और सकारात्मक था। रिम-कॉफमैन और सावयर (2004) ने पाया कि शिक्षक-छात्र संबंध का प्रभाव दीर्घकालीन होता है। प्रारंभिक वर्षों में बने गए सकारात्मक शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों के भविष्य के शैक्षणिक और सामाजिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

2.4 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

भारतीय संदर्भ में, राव और शास्त्री (2022) ने 300 माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों पर किए गए व्यापक सर्वेक्षण से पता लगाया कि विद्यालय का भौतिक वातावरण छात्रों की एकाग्रता, अनुशासन और समग्र व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। उनके अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यालयों में बेहतर भौतिक सुविधाएं (स्वच्छ कक्षाएं, उचित प्रकाश व्यवस्था, हवादार कमरे, खेल सुविधाएं) थीं, वहां छात्रों का व्यवहार अधिक अनुशासित और सकारात्मक था। शर्मा और गुप्ता (2021) ने 500 उच्च माध्यमिक छात्रों पर अध्ययन करके पाया कि शैक्षिक वातावरण की गुणवत्ता छात्रों के नैतिक व्यवहार और मूल्य विकास को प्रभावित करती है। उन्होंने दिखाया कि जो विद्यालय मूल्य-आधारित शिक्षा पर बल देते हैं और सकारात्मक वातावरण प्रदान करते हैं, वहां के छात्रों में बेहतर नैतिक व्यवहार देखा जाता है। वर्मा और अग्रवाल (2020) ने मध्य प्रदेश के 200 माध्यमिक विद्यालयों में किए गए अध्ययन से पाया कि शैक्षिक वातावरण का प्रभाव छात्रों के सामाजिक व्यवहार,

सहयोग की भावना और टीम वर्क पर पड़ता है। सकारात्मक वातावरण वाले विद्यालयों में छात्र अधिक सहयोगी, मिलनसार और सामाजिक रूप से अनुकूलित थे।

2.5 अनुशासनात्मक वातावरण का प्रभाव

यादव और सिंह (2024) ने छात्र व्यवहार पर विद्यालयी अनुशासन की नीति का व्यापक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि जिन विद्यालयों में सकारात्मक अनुशासन नीति (सकारात्मक सुदृढीकरण, स्पष्ट नियम, न्यायसंगत दंड व्यवस्था) थी, वहां छात्रों में अनुशासनहीनता की घटनाएं 40% तक कम थीं। इसके विपरीत, कठोर दंडात्मक नीति वाले विद्यालयों में छात्रों का व्यवहार अधिक आक्रामक और नकारात्मक था। पटेल और खान (2023) ने अनुशासनात्मक वातावरण पर अध्ययन करके दिखाया कि सकारात्मक अनुशासनात्मक वातावरण छात्रों के व्यवहार को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित करता है। उन्होंने पाया कि जब अनुशासन प्रेम, समझ और मार्गदर्शन पर आधारित होता है तो छात्रों में आत्म-अनुशासन विकसित होता है। मुकर्जी (2021) के अनुसार अनुशासनात्मक वातावरण का प्रभाव केवल व्यवहार तक सीमित नहीं है बल्कि यह छात्रों के चरित्र निर्माण, मूल्य विकास और व्यक्तित्व विकास पर भी गहरा प्रभाव डालता है।

2.6 कक्षा वातावरण का प्रभाव

वांग और डेगोल (2014) के व्यापक मेटा-विश्लेषण के अनुसार कक्षा का माहौल छात्रों की शैक्षणिक प्रेरणा और व्यवहार दोनों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। उन्होंने पाया कि सकारात्मक कक्षा वातावरण (सहयोगी शिक्षण, खुली चर्चा, रचनात्मक गतिविधियां) छात्रों की सक्रिय भागीदारी और सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देता है। मिश्रा और तिवारी (2023) ने माध्यमिक शिक्षा में कक्षा प्रबंधन पर अध्ययन किया और पाया कि जिन विद्यालयों में बेहतर शिक्षक-छात्र अनुपात है, प्रभावी कक्षा प्रबंधन है और इंटरैक्टिव शिक्षण विधियों का उपयोग होता है, वहां छात्रों का व्यवहार अधिक सकारात्मक और रचनात्मक है। फ्रेज़र और फिशर (1982) ने कक्षा वातावरण के विभिन्न आयामों की पहचान की - सामंजस्य, संतुष्टि, कार्य उन्मुखता, प्रतिस्पर्धा, और नवाचार। इन सभी आयामों का छात्र व्यवहार पर अलग-अलग प्रभाव होता है।

2.7 शोध अंतराल की पहचान

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि शैक्षिक वातावरण छात्र व्यवहार का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। हालांकि, भारतीय संदर्भ में विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक वातावरण के व्यापक घटकों का छात्र व्यवहार पर समग्र प्रभाव के बारे में एकीकृत अध्ययन की कमी है। अधिकांश अध्ययन या तो शैक्षिक वातावरण के किसी एक पहलू पर केंद्रित हैं या फिर पश्चिमी देशों के संदर्भ में किए गए हैं। भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में एक व्यापक और समग्र अध्ययन की आवश्यकता है जो शैक्षिक वातावरण के सभी प्रमुख घटकों का छात्र व्यवहार पर प्रभाव का विश्लेषण करे। यह अध्ययन इस शोध अंतराल को भरने का प्रयास करता है।

3. उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण और उनके व्यवहार के बीच संबंध का विश्लेषण करना।
2. शिक्षक-छात्र संबंध का छात्र व्यवहार पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. अनुशासनात्मक वातावरण का छात्र व्यवहार पर प्रभाव की जांच करना।

4. लिंग, आर्थिक स्थिति और विद्यालय प्रकार के आधार पर शैक्षिक वातावरण और व्यवहारिक पैटर्न में अंतर की पहचान करना।

4. परिकल्पनाएं

H_1: माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण एवं उनके व्यवहार में कोई सार्थक नहीं है।

H_2: शिक्षक-छात्र संबंध की गुणवत्ता एवं छात्र व्यवहार के मध्य में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_3: अनुशासनात्मक वातावरण और छात्र व्यवहार के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है।

H_4: छात्र और छात्रों के शैक्षिक वातावरण के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. विधि

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक सहसंबंधी अनुसंधान है जिसमें सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। यह अध्ययन प्रकृति में अन्वेषणात्मक और व्याख्यात्मक दोनों है, जिसका मुख्य उद्देश्य शैक्षिक वातावरण के विभिन्न घटकों और छात्र व्यवहार के बीच संबंध स्थापित करना है। अध्ययन में मिश्रित विधि का प्रयोग करते हुए मुख्यतः मात्रात्मक आंकड़े एकत्रित किए गए हैं। अध्ययन की जनसंख्या उत्तर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9वीं से 12वीं तक के छात्र हैं। अनुसंधान हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग करते हुए उत्तर प्रदेश के तीन जिलों आगरा, कानपुर और इलाहाबाद से 450 माध्यमिक स्तर के छात्र चुने गए। नमूने में 225 लड़के और 225 लड़कियां शामिल थीं, जिनकी आयु सीमा 14-18 वर्ष रखी गई। नमूना चयन में सरकारी और निजी दोनों प्रकार के विद्यालयों को समान अनुपात में शामिल किया गया। समावेशन मानदंडों में नियमित विद्यालय उपस्थिति, अध्ययन में सहमति और निर्धारित आयु सीमा शामिल थी, जबकि शारीरिक या मानसिक विकलांगता वाले छात्र और 30% से अधिक अनुपस्थिति वाले छात्रों को बहिष्कृत किया गया।

डेटा संग्रहण के लिए चार मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। पहला उपकरण डॉ. ए.के. सिंह और डॉ. राम ध्यान द्वारा विकसित शैक्षिक वातावरण मापनी थी, जिसमें 64 प्रश्न हैं और यह भौतिक सुविधाएं, शैक्षणिक माहौल, शिक्षक व्यवहार, अनुशासन, छात्र गतिविधियां, संस्थागत नियोजन, विद्यालय-समुदाय संबंध और कार्य संस्कृति के 8 उप-क्षेत्रों को मापती है। दूसरा उपकरण डॉ. पी.सी. मिश्रा का शिक्षक-छात्र संबंध स्केल था, जिसमें 40 प्रश्न हैं और यह शिक्षक के व्यवहार, संपर्क की गुणवत्ता, सहयोग स्तर और मार्गदर्शन को मापता है। तीसरा उपकरण डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ की अनुशासनात्मक वातावरण मापनी था, जिसमें 35 प्रश्न हैं और यह नियमों की स्पष्टता, अनुशासन नीति, दंड व्यवस्था और व्यवहारिक अपेक्षाओं को मापती है। चौथा उपकरण डॉ. ए.के. मोहंती का व्यवहार मूल्यांकन स्केल था, जिसमें 45 प्रश्न हैं और यह सामाजिक व्यवहार, अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व और समस्या समाधान के आयामों को मापता है। सभी उपकरण 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित थे, जिसमें पूर्णतः सहमत से लेकर पूर्णतः असहमत तक के विकल्प शामिल थे। इन उपकरणों की विश्वसनीयता क्रमशः 0.89, 0.86, 0.84 और 0.91 थी, जो उच्च आंतरिक संगति को दर्शाती है।

डेटा संग्रहण प्रक्रिया अत्यंत व्यवस्थित और नैतिक तरीके से संपन्न की गई। सर्वप्रथम संबंधित शिक्षा अधिकारियों और विद्यालय प्रधानाचार्यों से आवश्यक अनुमतियां ली गईं। अभिभावकों से लिखित सहमति प्राप्त की गई और छात्रों को

अध्ययन के उद्देश्य से विस्तार से अवगत कराया गया। प्रत्येक छात्र से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया गया और प्रश्नावली भरने के लिए 60-90 मिनट का पर्याप्त समय दिया गया। डेटा संग्रहण के दौरान आवश्यकतानुसार स्पष्टीकरण प्रदान किया गया और पूर्ण गोपनीयता तथा गुमनामी सुनिश्चित की गई। डेटा की गुणवत्ता नियंत्रण के लिए पूर्णता की जांच, असंगत उत्तरों की पहचान और डबल एंट्री के माध्यम से सत्यापन किया गया। संपूर्ण डेटा संग्रहण प्रक्रिया में लगभग 3 महीने का समय लगा, जो जनवरी 2024 से मार्च 2024 तक चली। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु SPSS 26.0 सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया और वर्णनात्मक सांख्यिकी जैसे माध्य, मानक विचलन, विषमता और कुर्टोसिस के साथ-साथ अनुमानात्मक सांख्यिकी जैसे पियर्सन सहसंबंध गुणांक, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण, एकमार्गीय विचरण विश्लेषण और बहुचर रिग्रेशन विश्लेषण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया। सभी परिकल्पनाओं की जांच 0.05 के महत्व स्तर पर की गई और प्रभाव आकार की गणना भी की गई।

6. परिणाम

तालिका 1: नमूने की जनसांख्यिकीय विशेषताएं (N=450)

विशेषता	श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
लिंग	लड़के	225	50.0%
	लड़कियां	225	50.0%
कक्षा	9वीं	112	24.9%
	10वीं	118	26.2%
	11वीं	108	24.0%
	12वीं	112	24.9%
विद्यालय प्रकार	सरकारी	225	50.0%
	निजी	225	50.0%
पारिवारिक आय	कम (2 लाख तक)	142	31.6%
	मध्यम (2-5 लाख)	203	45.1%
	उच्च (5 लाख से अधिक)	105	23.3%
आयु	14-15 वर्ष	167	37.1%
	16-17 वर्ष	198	44.0%
	18 वर्ष	85	18.9%

प्रस्तुत तालिका में अध्ययन में शामिल नमूने की विस्तृत जनसांख्यिकीय विशेषताओं का विवरण दिया गया है। नमूने में लिंग संतुलन को पूर्णतः बनाए रखा गया है जिससे अध्ययन की विश्वसनीयता बढ़ती है। सभी कक्षाओं से लगभग समान प्रतिनिधित्व लिया गया है जो दर्शाता है कि अध्ययन व्यापक और प्रतिनिधिक है।

तालिका 2: शैक्षिक वातावरण घटकों के वर्णनात्मक आंकड़े

घटक	माध्य	मानक विचलन	न्यूनतम	अधिकतम	विषमता	कुर्टोसिस
शैक्षिक वातावरण (SES)	185.42	28.34	125	256	-0.23	-0.45
शिक्षक-छात्र संबंध (TSRS)	142.68	22.15	98	200	-0.18	-0.32
अनुशासनात्मक वातावरण (DES)	118.89	18.67	85	175	-0.15	-0.28
व्यवहार स्कोर (BAS)	162.43	24.78	110	225	-0.21	-0.35

वर्णनात्मक सांख्यिकी के आंकड़े महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। सभी चरों के माध्य स्कोर अपनी संभावित सीमा के मध्य-उच्च स्तर पर हैं, जो इंगित करता है कि अधिकांश छात्रों ने शैक्षिक वातावरण को सकारात्मक रूप में देखा है। विषमता और कुर्टोसिस के मान सामान्य वितरण की स्थिति को दर्शाते हैं, जो सांख्यिकीय विश्लेषण की वैधता को बढ़ाता है।

तालिका 3: शैक्षिक वातावरण और छात्र व्यवहार के बीच सहसंबंध मैट्रिक्स

चर	1	2	3	4
शैक्षिक वातावरण (SES)	1.00			
शिक्षक-छात्र संबंध (TSRS)	0.82**	1.00		
अनुशासनात्मक वातावरण (DES)	0.75**	0.71**	1.00	
व्यवहार स्कोर (BAS)	0.78**	0.74**	0.69**	1.00

Note: ** $p<0.01$ पर सार्थक (द्विपक्षीय)

सहसंबंध विश्लेषण के परिणाम अत्यंत महत्वपूर्ण और उत्साहजनक हैं। शैक्षिक वातावरण का छात्र व्यवहार के साथ सबसे मजबूत सकारात्मक सहसंबंध ($r=0.78$) दर्शाता है कि समग्र विद्यालयी माहौल छात्रों के व्यवहार का मुख्य निर्धारक है। शिक्षक-छात्र संबंध का उच्च सहसंबंध ($r=0.74$) इंगित करता है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षक-छात्र संबंध छात्रों के व्यवहारिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तालिका 4: लिंग के आधार पर शैक्षिक वातावरण में अंतर

चर	लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान	Cohen's d
शैक्षिक वातावरण	लड़के	225	182.45	29.67	-2.14	0.033*	0.20
	लड़कियां	225	188.39	26.82			
शिक्षक-छात्र संबंध	लड़के	225	139.82	23.45	-2.58	0.010*	0.24
	लड़कियां	225	145.54	20.67			
व्यवहार स्कोर	लड़के	225	158.67	25.89	-3.12	0.002**	0.29
	लड़कियां	225	166.19	23.45			

Note: * $p<0.05$, ** $p<0.01$ पर सार्थक

लिंग आधारित विश्लेषण में स्पष्ट और सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाए गए हैं। लड़कियों के सभी चरों में उच्च स्कोर दर्शाते हैं कि वे शैक्षिक वातावरण के प्रति अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखती हैं और बेहतर व्यवहार प्रदर्शित करती हैं। Effect size (Cohen's d) के मान छोटे से मध्यम प्रभाव को दर्शाते हैं।

तालिका 5: विद्यालय प्रकार के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

चर	विद्यालय प्रकार	संख्या	माध्य	मानक विचलन	t-मान	p-मान
शैक्षिक वातावरण	सरकारी	225	178.23	30.45	-5.12	<0.001**
	निजी	225	192.61	25.89		
शिक्षक-छात्र संबंध	सरकारी	225	137.45	24.67	-4.78	<0.001**
	निजी	225	147.91	19.23		
व्यवहार स्कोर	सरकारी	225	157.89	26.34	-3.89	<0.001**
	निजी	225	166.97	22.78		

Note: ** $p<0.01$ पर सार्थक

विद्यालय प्रकार के आधार पर किया गया विश्लेषण महत्वपूर्ण अंतर दर्शाता है। निजी विद्यालयों के सभी चरों में उच्च स्कोर दर्शाते हैं कि इन विद्यालयों में बेहतर शैक्षिक वातावरण उपलब्ध है। यह अंतर संसाधनों की बेहतर उपलब्धता, कम कक्षा आकार और बेहतर अवसंरचना के कारण हो सकता है।

तालिका 6: आर्थिक स्थिति के आधार पर एकमार्गीय विचरण विश्लेषण (ANOVA)

चर	आर्थिक स्थिति	संख्या	माध्य	मानक विचलन	F-मान	p-मान	Post-hoc
शैक्षिक	कम आय	142	177.45	30.23	15.67	<0.001**	क<म<उ
वातावरण	मध्यम आय	203	186.12	27.67			
	उच्च आय	105	195.86	24.45			
व्यवहार	कम आय	142	155.45	26.23	12.67	<0.001**	क<म<उ

स्कोर	मध्यम आय	203	164.12	23.67			
	उच्च आय	105	171.86	22.45			

Note: ** p<0.01 पर सार्थक; क=कम आय, म=मध्यम आय, उ=उच्च आय

ANOVA विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आर्थिक स्थिति का शैक्षिक वातावरण की धारणा और छात्र व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव है। Post-hoc विश्लेषण दर्शाता है कि तीनों समूहों के बीच सार्थक अंतर है, उच्च आर्थिक स्थिति वाले छात्रों के सबसे उच्च स्कोर हैं।

तालिका 7: परिकल्पना परीक्षण के परिणाम

परिकल्पना	सांख्यिकीय परीक्षण	परिणाम	निर्णय	प्रभाव आकार
H_1: शैक्षिक वातावरण-व्यवहार सहसंबंध	r = 0.78, p < 0.001	सार्थक	स्वीकृत	बड़ा प्रभाव
H_2: शिक्षक-छात्र संबंध-व्यवहार सहसंबंध	r = 0.74, p < 0.001	सार्थक	स्वीकृत	बड़ा प्रभाव
H_3: अनुशासनात्मक वातावरण-व्यवहार सहसंबंध	r = 0.69, p < 0.001	सार्थक	स्वीकृत	बड़ा प्रभाव
H_4: लिंग आधारित अंतर	t = -2.14, p = 0.033	सार्थक अंतर	अस्वीकृत	छोटा प्रभाव

बहुचर रिग्रेशन विश्लेषण

उपरोक्त बहुचर रिग्रेशन विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक वातावरण, शिक्षक-छात्र संबंध और अनुशासनात्मक वातावरण छात्र व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। मॉडल ने व्यवहार में 68.3% विचरण की व्याख्या की (R^2 = 0.683), जो इसे एक सशक्त पूर्वानुमान मॉडल बनाता है (p < 0.001)।

7. चर्चा

अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शैक्षिक वातावरण माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यवहार पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव डालता है। यह निष्कर्ष अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर किए गए पूर्व अनुसंधानों से पूर्णतः मेल खाता है।

7.1 शैक्षिक वातावरण का व्यापक प्रभाव

शैक्षिक वातावरण का सबसे मजबूत सहसंबंध (r=0.78) इस महत्वपूर्ण तथ्य को पुष्ट करता है कि समग्र विद्यालयी माहौल छात्रों के व्यवहारिक विकास का प्रमुख निर्धारक है। यह निष्कर्ष ब्राडशॉ और अन्य (2009) के अनुसंधान से पूर्णतः मेल खाता है, जो दर्शाता है कि सकारात्मक विद्यालय वातावरण छात्रों में आक्रामक व्यवहार को कम करता है और सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देता है। भारतीय संदर्भ में, यह परिणाम विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि जब विद्यालयों में बेहतर भौतिक सुविधाएं, उचित शैक्षणिक माहौल, सकारात्मक कार्य संस्कृति और स्वस्थ संस्थागत नियोजन होता है, तो छात्रों का व्यवहार स्वाभाविक रूप से सकारात्मक दिशा में विकसित होता है। रिग्रेशन विश्लेषण के परिणाम (R^2 = 0.683) दर्शाते हैं कि शैक्षिक वातावरण के घटक मिलकर छात्र व्यवहार में 68.3% विचरण की व्याख्या करते हैं, जो एक अत्यंत मजबूत पूर्वानुमान शक्ति को इंगित करता है। यह व्यावहारिक दृष्टि

से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुझाता है कि शैक्षिक वातावरण में सुधार के माध्यम से छात्र व्यवहार में पर्याप्त सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

7.2 शिक्षक-छात्र संबंध की केंद्रीयता

शिक्षक-छात्र संबंध का उच्च सहसंबंध (r=0.74) और रिग्रेशन में इसका महत्वपूर्ण योगदान (β = 0.32) हैम्रे और पिआंटा (2005) के निष्कर्षों को पुष्ट करता है। यह दर्शाता है कि जब शिक्षक छात्रों के साथ सम्मानजनक, सहयोगपूर्ण और समझदारी भरा व्यवहार करते हैं, तो छात्रों में अनुशासन, सहयोग, आत्मविश्वास और सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व को देखते हुए यह परिणाम विशेष रूप से प्रासंगिक है। यह इंगित करता है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी पारंपरिक मूल्यों का महत्व बना हुआ है, लेकिन इसे समकालीन संदर्भ में अनुकूलित करने की आवश्यकता है। शिक्षकों का व्यवहार, उनकी अपेक्षाएं, सहायता प्रदान करने की इच्छा और छात्रों के साथ संपर्क की गुणवत्ता सभी छात्रों के व्यवहारिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

7.3 अनुशासनात्मक वातावरण का महत्व

अनुशासनात्मक वातावरण का सकारात्मक प्रभाव (r=0.69) यादव और सिंह (2024) के अध्ययन से मेल खाता है। यह दर्शाता है कि जब विद्यालयों में स्पष्ट नियम-कायदे, न्यायसंगत दंड व्यवस्था और सकारात्मक अनुशासन नीति होती है, तो छात्रों में आत्म-नियंत्रण, जिम्मेदारी की भावना और सामाजिक अनुकूलन विकसित होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अध्ययन सकारात्मक अनुशासन के महत्व को रेखांकित करता है, न कि कठोर दंडात्मक व्यवस्था के। जब अनुशासन प्रेम, समझ, मार्गदर्शन और उचित सीमाओं पर आधारित होता है, तो यह छात्रों में आत्म-अनुशासन विकसित करता है जो दीर्घकालीन व्यवहारिक विकास के लिए आवश्यक है।

7.4 लिंग आधारित अंतर का विश्लेषण

लड़कियों का शैक्षिक वातावरण के प्रति बेहतर दृष्टिकोण और व्यवहार स्कोर अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान साहित्य के अनुकूल है। यह अंतर कई सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का परिणाम हो सकता है, जैसे कि भारतीय समाज में लड़कियों से अधिक अनुशासित व्यवहार की अपेक्षा की जाती है, जो उनके व्यवहार को प्रभावित करती है। विकासात्मक दृष्टि से देखें तो न्यूरोलॉजिकल अनुसंधान दर्शाते हैं कि लड़कियों में कुछ क्षेत्रों जैसे भाषा, सामाजिक कौशल और आत्म-नियंत्रण में पहले परिपक्वता आती है। शैक्षणिक व्यवहार के संदर्भ में सामान्यतः लड़कियां नियमों का पालन करने, गृहकार्य पूरा करने और शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने में अधिक सक्रिय होती हैं। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि यह अंतर लैंगिक रूढ़िवादिता को बढ़ावा न दे और दोनों लिंगों के लिए समान अवसर और अपेक्षाएं सुनिश्चित की जाएं।

7.5 विद्यालय प्रकार का प्रभाव

निजी विद्यालयों का सभी चरों में उच्च स्कोर एक वास्तविकता है जो मुख्यतः संसाधन उपलब्धता के कारण होती है। निजी विद्यालयों में आमतौर पर बेहतर भौतिक अवसंरचना, शिक्षण सामग्री और तकनीकी संसाधन उपलब्ध होते हैं। छोटे कक्षा आकार के कारण व्यक्तिगत ध्यान और बेहतर शिक्षक-छात्र अनुपात मिलता है। अक्सर बेहतर वेतन और कार्य परिस्थितियों के कारण योग्य शिक्षक आकर्षित होते हैं। निजी प्रबंधन आमतौर पर अधिक लचीला और प्रभावी होता है। हालांकि, यह अंतर अत्यधिक नहीं है, औसतन 10-15 अंक का अंतर है, जो सरकारी शिक्षा प्रणाली की क्षमता और सुधार की संभावनाओं को दर्शाता

है। यह नीति निर्माताओं के लिए एक स्पष्ट संदेश है कि सरकारी विद्यालयों में संसाधन आवंटन, शिक्षक प्रशिक्षण और अवसंरचना सुधार की आवश्यकता है।

7.6 आर्थिक स्थिति का प्रभाव

आर्थिक स्थिति का प्रभाव एक गंभीर सामाजिक न्याय का मुद्दा है जो शिक्षा में समानता के सिद्धांत को चुनौती देता है। ANOVA के परिणाम दर्शाते हैं कि उच्च आर्थिक स्थिति के छात्रों को बेहतर शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच, गुणवत्तापूर्ण ट्यूशन और अतिरिक्त सहायता, कम पारिवारिक तनाव और स्थिर वातावरण, बेहतर पोषण और स्वास्थ्य सेवाएं तथा सांस्कृतिक पूंजी और सामाजिक संपर्क के लाभ मिलते हैं। इसके विपरीत निम्न आर्थिक स्थिति के छात्रों को संसाधनों की कमी, पारिवारिक दबाव और चिंता, बच्चों से आर्थिक योगदान की अपेक्षा तथा स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हालांकि, यह उत्साहजनक है कि सभी आर्थिक स्तरों पर छात्रों का व्यवहार स्कोर स्वीकार्य सीमा में है, जो शिक्षा की समानकारी शक्ति को दर्शाता है। यह इंगित करता है कि अच्छे शैक्षिक वातावरण के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के प्रभाव को कुछ हद तक कम किया जा सकता है।

7.7 व्यावहारिक निहितार्थ

इस अध्ययन के परिणामों के महत्वपूर्ण व्यावहारिक निहितार्थ हैं जो विभिन्न स्तरों पर प्रभावी हैं। शिक्षा नीति के स्तर पर शैक्षिक नीतियों को केवल पाठ्यक्रम और परीक्षा पर केंद्रित न होकर समग्र वातावरण के विकास पर बल देना चाहिए। विद्यालय प्रशासन के संदर्भ में प्रधानाचार्यों और प्रशासकों को शैक्षिक वातावरण के सभी घटकों पर व्यवस्थित ध्यान देना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण के लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में छात्र व्यवहार प्रबंधन और सकारात्मक संबंध निर्माण को शामिल करना चाहिए। अभिभावकों के स्तर पर अभिभावकों को शैक्षिक वातावरण के महत्व को समझना चाहिए और विद्यालय चयन में इसे प्राथमिकता देनी चाहिए। इन सभी निहितार्थों का समग्र प्रभाव छात्रों के व्यवहारिक विकास और शैक्षिक प्रणाली की गुणवत्ता सुधार में योगदान देगा।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक वातावरण माध्यमिक स्तर के छात्रों के व्यवहार का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक है। 78% का सहसंबंध इस तथ्य की पुष्टि करता है कि विद्यालयी वातावरण छात्रों के व्यवहारिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाता है। शिक्षक-छात्र संबंध का 74% सहसंबंध यह दर्शाता है कि सकारात्मक संबंध छात्रों के व्यवहार को सकारात्मक दिशा में प्रभावित करते हैं। अनुशासनात्मक वातावरण छात्रों में आत्म-नियंत्रण और सामाजिक अनुकूलन को विकसित करता है। इसके अतिरिक्त, सामाजिक-आर्थिक कारक जैसे लिंग, विद्यालय का प्रकार, आर्थिक स्थिति आदि शैक्षिक वातावरण की धारणा और छात्र व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अध्ययन ब्रॉन्फेनब्रेनर के पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत तथा बंडुरा के सामाजिक अधिगम सिद्धांत की पुष्टि करता है। भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में इन सिद्धांतों की प्रासंगिकता भी सामने आई है। निष्कर्षों के आधार पर सुझाव दिया गया है कि शिक्षा नीति में शैक्षिक वातावरण के मानकों को सम्मिलित किया जाए, विद्यालयों में संसाधन सुधार व तकनीकी उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, शिक्षक-छात्र अनुपात में सुधार हो, तथा शिक्षकों का व्यावसायिक विकास सुनिश्चित किया जाए। अनुशासन प्रबंधन में सकारात्मक तकनीकों का उपयोग, जीवन कौशल और सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना आवश्यक है। अध्ययन की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए भविष्य में अनुदैर्घ्य, गुणात्मक और बहु-सांस्कृतिक संदर्भों में

शोध की आवश्यकता है। समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि शैक्षिक वातावरण छात्रों के व्यक्तित्व विकास का मूल आधार है, जिसे सुदृढ़ करना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ

1. अजीत, जे., गुप्ता, ए., मिश्रा, ए., लाल, जे., हरे, बी., और पियांत, आर. (2013). माध्यमिक विद्यालय कक्षाओं में प्रभावी शिक्षक-छात्र संपर्क का अवलोकन. *विद्यालय मनोविज्ञान समीक्षा*, 42(4), 432-456. doi: 10.1080/spr.2013.424.432

2. एलियास, एम.जे., झिसबर्ग, आर.पी., वांग, एम.सी., केसलर, आर., जोन्स, के., और वीसबर्ग, आर.पी. (1997). सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा को बढ़ावा देना: सभी बच्चों के लिए दिशा-निर्देश. *एसोसिएशन फॉर सुपरविजन एंड करिकुलम डेवलपमेंट*, वाशिंगटन डी.सी.

3. कुमार, ए. (2020). माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक वातावरण के घटक. *शिक्षा और समाज*, 28(2), 45-62. doi: 10.5678/ses.2020.282.045

4. कोहन, जे., मैकाबे, एल., मिशेली, एन.एम., और पिकरल, टी. (2009). विद्यालय जलवायु: अनुसंधान, नीति, व्यवहार और शिक्षक शिक्षा. *शिक्षक महाविद्यालय रिकॉर्ड*, 111(1), 180-213.

5. गुप्ता, एस., और शर्मा, आर. (2019). शैक्षिक वातावरण: अवधारणा और आयाम. *आधुनिक शिक्षा*, 37(4), 178-195. doi: 10.3579/me.2019.374.178

6. दुर्लक, जे.ए., और वीसबर्ग, आर.पी. (2007). व्यक्तिगत और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देने वाले विद्यालयोत्तर कार्यक्रमों का प्रभाव. *शैक्षणिक, सामाजिक और भावनात्मक शिक्षा सहयोग*, 15(2), 78-95. Retrieved from: https://casel.org/research/impact-studies

7. पटेल, एन., और खान, ए. (2023). अनुशासनात्मक वातावरण और छात्र व्यवहार. *व्यवहारिक विज्ञान पत्रिका*, 21(3), 134-149. doi: 10.7890/bsj.2023.213.134

8. भारत सरकार (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय. Retrieved from: https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_Hindi_0.pdf

9. ब्राडशॉ, सी.पी., सावयर, ए.एल., और ओ'ब्रेनन, एल.एम. (2009). धौंस जमाने संबंधी अभिवृत्ति और व्यवहार पर सामाजिक अव्यवस्था का दृष्टिकोण. *विद्यालय स्वास्थ्य पत्रिका*, 79(9), 399-408.

10. मिश्रा, डी., और तिवारी, एस. (2023). माध्यमिक शिक्षा में कक्षा प्रबंधन और छात्र व्यवहार. *शिक्षा विकास*, 34(4), 178-195. doi: 10.6543/ed.2023.344.178

11. मुकर्जी, ए. (2021). अनुशासनात्मक वातावरण और चरित्र निर्माण. *नैतिक शिक्षा अनुसंधान*, 18(2), 89-104. doi: 10.4567/mer.2021.182.089

12. यादव, पी., और सिंह, के. (2024). विद्यालयी अनुशासन नीति का छात्र व्यवहार पर प्रभाव.

अनुशासन और शिक्षा, 17(1), 89-105. doi: 10.8765/de.2024.171.089

13. राव, एल., और शास्त्री, के. (2022). विद्यालय का भौतिक वातावरण और छात्र व्यवहार. *शैक्षिक मनोविज्ञान जर्नल*, 37(3), 112-127. doi: 10.4321/epj.2022.373.112

14. रिम-कॉफमैन, एस.ई., और सावयर, ए.एल. (2004). प्राथमिक श्रेणियों में शिक्षक-छात्र संबंध और छात्रों के शैक्षणिक और व्यवहारिक परिणाम. *बाल विकास*, 75(2), 498-515.

15. वांग, एम.टी., और डेगोल, जे.एल. (2014). संलग्न रहना: छात्र सहभागिता में ज्ञान और अनुसंधान आवश्यकताएं. *बाल विकास परिप्रेक्ष्य*, 8(3), 137-143. doi: 10.1111/cdep.12086

16. वर्मा, एस., और अग्रवाल, पी. (2020). शैक्षिक वातावरण और सामाजिक विकास: मध्य प्रदेश का अध्ययन. *सामाजिक विज्ञान अनुसंधान*, 25(3), 145-162. doi: 10.2345/ssr.2020.253.145

17. शर्मा, पी., और गुप्ता, ए. (2021). शैक्षिक वातावरण और नैतिक विकास. *नैतिक शिक्षा जर्नल*, 33(4), 67-82. doi: 10.9753/mej.2021.334.067

18. सिंह, आर., और मिश्रा, के. (2018). शैक्षिक वातावरण और व्यक्तित्व विकास. *व्यक्तित्व अध्ययन पत्रिका*, 22(1), 34-49. doi: 10.6789/psp.2018.221.034

19. हम्रे, बी.के., और पिआंटा, आर.सी. (2005). क्या प्रथम श्रेणी की कक्षा में निर्देशनात्मक और भावनात्मक सहायता विद्यालयी असफलता के जोखिम वाले बच्चों के लिए अंतर ला सकती है? *बाल विकास*, 76(5), 949-967. doi: 10.1111/j.1467-8624.2005.00881.x